पाठ - साखी

1- ऐसी बाँणी बोलिये ,मन का आपा खोइ।
अपना तन सीतल करै ,औरन कौ सुख होइ।।

शब्दार्थ

बाँणी – बोली
सीतल – शीतल (ठंडा ,अच्छा)
आपा – अहम् (अहंकार)
औरन – दूसरों को
खोइ – त्याग करना
होइ – होना

प्रसंग :- प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के कवि 'कबीरदास' जी है। इसमें कबीर ने मीठी बोली बोलने और दूसरों को दुःख न देने की बात कही है।

व्याख्या :- *इसमें कबीरदास जी कहते है कि हमें अपने मन का अहंकार त्याग कर ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जिसमें हमारा अपना तन मन भी स्वस्थ रहे और दूसरों को भी कोई कष्ट न हो अर्थात दूसरों को भी सुख प्राप्त हो।*

2- कस्तूरी कुंडली बसै ,मृग ढूँढै बन माँहि।
ऐसैं घटि- घटि राँम है , दुनियां देखै नाँहिं।।

शब्दार्थ

कुंडली – नाभि
मृग – हिरण
घटि घटि – कण कण

प्रसंग :- प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' से ली गई है। इसके कवि कबीरदास जी है इसमें कबीर कहते है कि संसार के लोग कस्तूरी हिरण की तरह हो गए है जिस तरह हिरण कस्तूरी प्राप्ति के लिए इधर उधर भटकता रहता है उसी तरह लोग भी ईश्वर प्राप्ति के लिए भटक रहे है।

व्याख्या :- *कबीरदास जी कहते है कि जिस प्रकार एक हिरण कस्तूरी की खुशबु को जंगल में ढूंढ़ता फिरता है जबकि वह सुगंध उसी की नाभि में विद्यमान होती है परन्तु वह इस बात से बेखबर होता है, उसी प्रकार संसार के कण-कण में ईश्वर विद्यमान है और मनुष्य इस बात से बेखबर ईश्वर को देवालयों और तीर्थों में ढूंढ़ता है। कबीर जी कहते है कि अगर ईश्वर को ढूंढ़ना ही है तो अपने मन में ढूंढो।*

3- जब मैं था तब हरि नहीं ,अब हरि हैं मैं नांहि।
सब अँधियारा मिटी गया , जब दीपक देख्या माँहि।।

शब्दार्थ

मैं – अहम् (अहंकार)
हरि – परमेश्वर
अँधियारा – अंधकार

प्रसंग :- प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के कवि कबीरदास जी हैं। इसमें कबीर जी मन में अहम् या अहंकार के मिट जाने के बाद मन में परमेश्वर के वास की बात कहते है।

व्याख्या :- *कबीर जी कहते हैं कि जब इस हृदय में 'मैं ' अर्थात मेरा अहंकार था तब इसमें परमेश्वर का वास नहीं था परन्तु अब हृदय में अहंकार नहीं है तो इसमें प्रभु का वास है। जब परमेश्वर नमक दीपक के दर्शन हुए तो अज्ञान रूपी अहंकार का विनाश हो गया।*

4- सुखिया सब संसार है , खायै अरु सोवै।
दुखिया दास कबीर है , जागै अरु रोवै।।

शब्दार्थ

सुखिया – सुखी
दुखिया – दुःखी
अरु – अज्ञान रूपी अंधकार
रोवै – रो रहे
सोवै – सोये हुए

प्रसंग :- प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के कवि कबीरदास जी है। इसमें कबीर जी अज्ञान रूपी अंधकार में सोये हुए मनुष्यों को देखकर दुःखी हैं और रो रहे है हैं।

व्याख्या :- *कबीर जी कहते हैं कि संसार के लोग अज्ञान रूपी अंधकार में डूबे हुए हैं अपनी मृत्यु आदि से भी अनजान सोये हुये हैं। ये सब देख कर कबीर दुखी हैं और वे रो रहे हैं। वे प्रभु को पाने की आशा में हमेशा चिंता में जागते रहते हैं।*

5- बिरह भुवंगम तन बसै , मंत्र न लागै कोइ।
राम बियोगी ना जिवै ,जिवै तो बौरा होइ।।

शब्दार्थ

बिरह – बिछड़ने का गम
भुवंगम – भुजंग , सांप
बौरा – पागल

प्रसंग :- प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गयी है। इस साखी के कवि कबीरदास जी हैं। इसमें कबीर कहते हैं कि ईश्वर के वियोग में मनुष्य जीवित नहीं रह सकता और अगर रह भी जाता है तो वह पागल हो जाता है।

व्याख्या :- *कबीरदास जी कहते हैं कि जब मनुष्य के मन में अपनों के बिछड़ने का गम सांप बन कर लोटने लगता है तो उस पर न कोई मन्त्र असर करता है और न ही कोई दवा असर करती है। उसी तरह राम अर्थात ईश्वर के वियोग में मनुष्य जीवित नहीं रह सकता और यदि वह जीवित रहता भी है तो उसकी स्थिति पागलों जैसी हो जाती है।*

6- निंदक नेड़ा राखिये , आँगणि कुटी बँधाइ।
बिन साबण पाँणीं बिना , निरमल करै सुभाइ।।

शब्दार्थ

निंदक – निंदा करने वाला
साबण – साबुन
नेड़ा – निकट
निरमल – साफ़
आँगणि – आँगन
सुभाइ – स्वभाव

प्रसंग:- प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के कवी कबीदास जी हैं। इसमें कबीरदास जी निंदा करने वाले व्यक्तियों को अपने पास रखने की सलाह देते हैं ताकि आपके स्वभाव में सकारात्मक परिवर्तन आ सके।

व्याख्या :- *इसमें कबीरदास जी कहते हैं कि हमें हमेशा निंदा करने वाले व्यक्तियों को अपने निकट रखना चाहिए। हो सके तो अपने आँगन में ही उनके लिए घर बनवा लेना चाहिए अर्थात हमेशा अपने आस पास ही रखना चाहिए। ताकि हम उनके द्वारा बताई गई हमारी गलतियों को सुधार सकें। इससे हमारा स्वभाव बिना साबुन और पानी की मदद के ही साफ़ हो जायेगा।*

7- पोथी पढ़ि – पढ़ि जग मुवा , पंडित भया न कोइ।
ऐकै अषिर पीव का , पढ़ै सु पंडित होइ।

शब्दार्थ

पोथी – पुस्तक
अषिर – अक्षर
मुवा – मरना
पीव – प्रिय
भया – बनना

eGyanArchive

प्रसंग :- प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के कवि कबीरदास जी हैं। इसमें कबीर जी पुस्तक ज्ञान को महत्त्व न देकर ईश्वर – प्रेम को महत्त्व देते हैं।

व्याख्या :- *कबीर जी कहते है कि इस संसार में मोटी – मोटी पुस्तकें (किताबें) पढ़ कर कई मनुष्य मर गए परन्तु कोई भी मनुष्य पंडित (ज्ञानी) नहीं बन सका। यदि किसी व्यक्ति ने ईश्वर प्रेम का एक भी अक्षर पढ़ लिया होता तो वह पंडित बन जाता अर्थात ईश्वर प्रेम ही एक सच है इसे जानने वाला ही वास्तविक ज्ञानी है।*

8- हम घर जाल्या आपणाँ , लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि।।

शब्दार्थ

जाल्या – जलाया
जालौं – जलाऊं
आपणाँ – अपना
तास का – उसका
मुराड़ा – जलती हुई लकड़ी , ज्ञान

प्रसंग :- प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के कवि कबीरदास जी हैं। इसमें कबीर मोह – माया रूपी घर को जला कर अर्थात त्याग कर ज्ञान को प्राप्त करने की बात करते हैं।

व्याख्या :- *कबीर जी कहते हैं कि उन्होंने अपने हाथों से अपना घर जला दिया है अर्थात उन्होंने मोह -माया रूपी घर को जला कर ज्ञान प्राप्त कर लिया है। अब उनके हाथों में जलती हुई मशाल (लकड़ी) है यानि ज्ञान है। अब वे उसका घर जलाएंगे जो उनके साथ चलना चाहता है अर्थात उसे भी मोह – माया से मुक्त होना होगा जो ज्ञान प्राप्त करना चाहता है।*

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1. मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर: मीठी वाणी बोलते समय व्यक्ति के मन में अहंकार नहीं होता है। इसमें प्रेम और अपनत्व की भावना का समावेश हो जाता है। इससे बोलने वाले की विनम्रता सहज ही झलकने लगती है। बोलने वाले द्वारा अहंकार का त्याग करने से अपने मन को शीतलता मिलती है। इसी प्रकार अपनत्व और प्रेम भरे वचन सुनने वाले सुख पहुँचाते हैं।

प्रश्न 2. दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: कवि के अनुसार जिस प्रकार दीपक के जलने पर अंधकार अपने-आप दूर हो जाता है, उसी प्रकार ज्ञानरूपी दीपक के हृदय में जलने पर अज्ञानरूपी अंधकार समाप्त हो जाता है। यहाँ दीपक ज्ञान के प्रकाश का प्रतीक है और अँधियारा अज्ञान का प्रतीक है। ज्ञान का प्रकाश होने पर मन में स्थित काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार आदि दुर्गुण समाप्त हो जाते हैं। अज्ञान की अवस्था में मनुष्य अपने ही हृदय में विराजमान ईश्वर को पहचान पाने में असमर्थ होता है। वह अपने-आप में ही डूबा रहता है। ज्ञान का प्रकाश होने पर वह परमात्मा साक्षात्कार में सफल हो जाता है। उसे अपने सब ओर ईश्वरीय सत्ता का आभास होता है। मनुष्य ईश्वर-प्राप्ति के मार्ग पर चल पड़ता है।

प्रश्न 3. ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते?

उत्तर: मनुष्य ने यह धारणा और विश्वास बना लिया है कि प्रभु तीर्थ स्थलों और धार्मिक स्थलों पर ही रहते हैं। इसके अलावा मनुष्य अपने अज्ञान और अहंकार के कारण प्रभु को नहीं देख पाता है। यही कारण है कि ईश्वर कण-कण में व्याप्त है पर हम उसे नहीं देख पाते हैं।

प्रश्न 4. संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: कबीरदास के अनुसार जो व्यक्ति केवल सांसारिक सुखों में डूबा रहता है और जिसके जीवन का उद्देश्य केवल खाना, पीना और सोना है, वही व्यक्ति सुखी है। इसके विपरीत जो व्यक्ति संसार की नश्वरता को देखकर रोता रहता है; वह दुखी है। ऐसे लोगों को संसार में फैली अज्ञानता को देखकर तरस आता है। ईश्वर-भक्ति से विमुख लोगों की दुर्दशा देखकर वे सो नहीं पाते। यहाँ 'सोना' शब्द 'अज्ञान' का तथा 'जागना' शब्द 'ज्ञान' का प्रतीक है। जो लोग संसारी सुखों में खोए हैं वे सोए हुए हैं। वे संसार की नश्वरता और क्षणभंगुरता को समझ नहीं पा रहे हैं। वे सांसारिक सुखों को सच्चा सुख मानकर उनके पीछे भाग रहे हैं। अज्ञानता के कारण ही वे अपना हीरे-सा अनमोल जीवन व्यर्थ गवाँ रहे हैं। दूसरी और ज्ञानी व्यक्ति जानता है कि संसार नश्वर है फिर भी मनुष्य इसमें डूबा हुआ है। यह देखकर वह दुखी हो जाता है। वह चाहता है कि मनुष्य भौतिक सुखों को त्यागकर ईश्वर प्राप्ति की ओर अग्रसर हो।

प्रश्न 5. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर: अपने स्वभाव को निर्मल बनाने के लिए कवि ने यह उपाय सुझाया है कि निंदक या आलोचक को सदा अपने पास रखना चाहिए। उसकी आलोचनाओं से परेशान होकर व्यक्ति अपना स्वभाव बदल लेता है और दुर्गुण सद्गुण में बदल लेता है। ऐसा करने में व्यक्ति को कुछ खर्च भी नहीं होता है।

प्रश्न 6. "ऐकै अषिर पीव का, पढ़े सु पंड़ित होइ'-इस पंक्ति दुवारा कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर: कवि इस पंक्ति के द्वारा शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा भक्ति व प्रेम की श्रेष्ठता को प्रतिपादित करना चाहते हैं। उनके अनुसार जो व्यक्ति अपने आराध्य के लिए प्रेम का एक अक्षर भी पढ़ ले अर्थात् जिसके हृदय में प्रेम तथा भक्ति भाव उत्पन्न हो जाए तो वह अपने आत्मरूप से परिचित हो जाता है। वही व्यक्ति ज्ञानी है जो ईश्वर प्रेम की महिमा को जान लेता है, उसके निर्विकार रूप के रहस्य को समझ जाता है। इस पंक्ति के माध्यम से सचेत करते हुए कवि कहता है कि केवल बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़ लेने से ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती। इसके लिए मन को सांसारिक मोह-माया से हटाकर ईश्वर भक्ति में लगाना पड़ता है।

प्रश्न 7. कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: कबीर अनपढ़ थे 'परंतु अनुभवी एवं ज्ञानी बहुत थे। वे भाषा के प्रयोग में नियमों के पालन या अवहेलना करने की परवाह किए बिना' बिना लाग-लपेट अपनी बात कह जाते हैं। उनकी भाषा में एक ओर अवधी के शब्द मिलते हैं तो दूसरी ओर पहाड़ी और राजस्थानी के शब्द भी भरपूर मात्रा में मिलते हैं। इसके अलावा उनकी भाषा में आम बोलचाल के शब्दों का भी प्रयोग है।

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1. विरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।

उत्तर: 'बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र ने लागै कोइ' का भाव यह है कि जिस व्यक्ति में राम (प्रभु) से दूर रहने पर उन्हें पाने की तड़प जाग उठती है उस व्यक्ति की दशा विष पीड़ित से भी खराब हो जाती है। इस व्यथा को शब्दों के माध्यम से प्रकट नहीं किया जा सकता है। साँप के विष को तो मंत्र द्वारा भी उतारा जा सकता है, परंतु राम की विरह व्यथा शांत करने का कोई उपाय नहीं है। ऐसी दशा में राम की वियोग व्यथा झेल रहा व्यक्ति के पास मरने के सिवा दूसरा रास्ता नहीं होता है। यदि वह जीता भी है तो उसकी दशा पागलों जैसी होती है क्योंकि वह न सांसारिक विषयों में मन लगा पाता है और न राम से मिल पाता है।

प्रश्न 2. कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढ़े बन माँहि।

उत्तर: 'कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढे बन माँहि' का भाव यह है कि मनुष्य की स्थिति मृग के समान होती है। जिस प्रकार कस्तूरी मृग की नाभि में होती है, परंतु उसकी महक के आकर्षण में खोया मृग यह नहीं जान पाता है कि आखिर वह सुगंधित पदार्थ (कस्तूरी) है

कहाँ? वह दर-दर, जंगल-जंगल इसे खोजता फिरता है पर निराशा ही उसके हाथ लगती है। वह आजीवन इस कस्तूरी को खोजता-खोजता इस दुनिया से चला जाता है। कुछ ऐसा ही मनुष्य के साथ है जो ईश्वर को अपने भीतर न खोजकर जगह-जगह खोजता फिरता है।

प्रश्न 3. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।
उत्तर: 'जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि' पंक्ति का भाव यह है कि ईश्वर की प्राप्ति और अहंकार दोनों एक साथ उसी तरह नहीं रह सकते हैं जैसे एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकती हैं। कबीर का कहना है कि जब तक उनके मन में अहंकार अर्थात् मैं का दंभ था, तब तक ईश्वर के न दर्शन हो सके और न प्रभु को मन में बसा सका, परंतु जब से मन में ईश्वर का वास हुआ है तब से अहंकार के लिए कोई जगह ही नहीं बची। प्रभु के मन में वास होने से मन में बसा अंधकार, अज्ञान और भ्रम रूपी अंधकार नष्ट हो गया।

प्रश्न 4. पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।
उत्तर: कबीर ईश्वर प्राप्ति पर बल देते हुए कहते हैं कि ईश्वर को पाने के लिए संसार के लोग पोथियाँ (मोटी-मोटी भारी भरकम धार्मिक ग्रंथ) पढ़ते रहे। आजीवन ऐसा करते रहने पर भी उन्हें वह ज्ञान न मिल सका जिससे वे पंडित या विद्वान बन सकें। पीव अर्थात् निराकार ब्रह्म का एक ही अक्षर जिसने पढ़ लिया वही पंडित बन गया अर्थात् ब्रह्म के बारे में जाने बिना ज्ञानी कहलाने की बात निरर्थक है।

भाषा अध्ययन
प्रश्न 1. पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप उदाहरण के अनुसार लिखिए
उत्तर:
उपरोक्त शब्दों के प्रचलित रूप –

1. औरन - औरों को,
2. माँहि - मध्य (में),
3. देख्या - देखा,
4. भुवंगम - भुजंग,
5. नेड़ा - निकट,
6. आँगणि - आँगन,
7. साबण - साबुन,
8. मुवा - मरा,
9. पीव - प्रिय,
10. जालौं - जलाऊँ,
11. तास - उसका

योग्यता विस्तार
प्रश्न 1. 'साधु में निंदा सहन करने से विनयशीलता आती है तथा व्यक्ति को मीठी व कल्याणकारी वाणी बोलनी चाहिए'-इन विषयों पर कक्षा में परिचर्चा आयोजित कीजिए।
उत्तर:
परिचर्चा का विषय:
"साधु में निंदा सहन करने से विनयशीलता आती है तथा व्यक्ति को मीठी व कल्याणकारी वाणी बोलनी चाहिए।"

egyanarchive

उद्देश्य:

- सहिष्णुता और विनयशीलता के महत्व को समझना
- वाणी की शक्ति और उसके सामाजिक प्रभाव को पहचानना
- संवाद और तर्कशक्ति के माध्यम से नैतिक विचारों को प्रकट करना

मुख्य बिंदु / विचार-विमर्श के विषय:

1. **निंदा सहन करने का अर्थ क्या है? क्या यह कमजोरी है या शक्ति?**
2. **साधु का व्यवहार – सहनशीलता, नम्रता और आत्मसंयम क्यों आवश्यक हैं?**
3. **मीठी और कल्याणकारी वाणी का समाज पर क्या प्रभाव होता है?**
4. **क्रोध, कटुता और कटाक्ष की भाषा से क्या हानि होती है?**
5. **प्रेरणादायक उदाहरण – महात्मा गांधी, कबीर, बुद्ध, या संत रविदास**
6. **आज की सोशल मीडिया और बातचीत की शैली में कितनी विनयशीलता है?**

शिक्षक की भूमिका:

- परिचर्चा की शुरुआत एक प्रेरक उद्धरण या कहानी से करें।
- छात्रों को दो पक्षों में बाँटें – एक पक्ष "विनयशीलता की शक्ति" पर बोले, दूसरा "वाणी की भूमिका" पर।
- हर छात्र को 1–2 मिनट बोलने का अवसर दें।
- चर्चा के दौरान शांति बनाए रखें और बच्चों को सम्मानपूर्वक सुनना सिखाएँ।

छात्रों को दिए जा सकने वाले प्रश्न:

- आपने कब किसी की कटु वाणी से ठेस महसूस की?
- क्या आप कभी ऐसे व्यक्ति से मिले हैं जो गुस्सा नहीं करते, बल्कि शांति से बात करते हैं?
- क्या मीठी वाणी बोलने से दूसरों का व्यवहार भी बदल सकता है?

परिचर्चा के अंत में शिक्षक की टिप्पणी:

"एक सज्जन व्यक्ति वही है, जो दूसरों की निंदा सुनकर भी अपनी भाषा और व्यवहार में संयम बनाए रखे। वाणी में मधुरता न केवल दूसरों को प्रभावित करती है, बल्कि हमारे जीवन को भी शांत और सुंदर बनाती है।"

कक्षा 10 के लिए एक **काल्पनिक परिचर्चा** (Scripted Classroom Discussion) —

विषय: *"साधु में निंदा सहन करने से विनयशीलता आती है तथा व्यक्ति को मीठी व कल्याणकारी वाणी बोलनी चाहिए।"*

काल्पनिक परिचर्चा

भूमिका:

8 छात्रों का समूह – सभी क्रम से अपने विचार व्यक्त करेंगे। शिक्षक की भूमिका एक सूत्रधार (moderator) के रूप में होगी।

समय: लगभग 6–8 मिनट

भाषा: सरल हिंदी (थोड़ा साहित्यिक प्रभाव के साथ)

सूत्रधार (शिक्षक):

edyanarchive

"बच्चों, आज की परिचर्चा का विषय है — *'साधु में निंदा सहन करने से विनयशीलता आती है तथा व्यक्ति को मीठी व कल्याणकारी वाणी बोलनी चाहिए।'*
अब मैं आमंत्रित करता हूँ हमारे पहले वक्ता को।"

छात्र 1 (आरंभिक विचार):
"मुझे लगता है कि निंदा सहन करना कोई आसान काम नहीं है। लेकिन जो व्यक्ति इसे सहन कर पाता है, वही सच्चा विनम्र और मजबूत होता है। साधु या सज्जन पुरुष इसलिए महान होते हैं क्योंकि वे अपमान का उत्तर अपमान से नहीं देते।"

छात्रा 2:
"बिलकुल सही कहा गया। संत कबीर कहते हैं –
'निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।'
मतलब, जो हमारी निंदा करता है, वह हमें सुधारने में मदद करता है।"

छात्र 3:
"लेकिन क्या हम हमेशा निंदा सह सकते हैं? समाज में तो लोग तुरंत प्रतिक्रिया देते हैं। ऐसे में खुद को संयमित रखना बहुत कठिन होता है।"

छात्रा 4:
"यही तो साधु की पहचान है। साधु वही है जो दूसरों के कटु वचनों पर भी मधुर वाणी में उत्तर दे। हमारी वाणी में मिठास होगी, तो सामने वाला भी बदल सकता है।"

छात्र 5:
"मीठी वाणी केवल एक गुण नहीं, एक शक्ति है। रामायण में कहा गया है –
'वचन सुधा सम बानी बोलिए, मन हरषै जन सुनि सुख पावैं।'
यानी मीठे वचन सुनकर दूसरों का मन प्रसन्न हो जाता है।"

छात्रा 6:
"आजकल सोशल मीडिया पर कटु भाषा और ट्रोलिंग आम हो गई है। अगर हम विनयशील रहें और मधुर बोलें, तो शायद समाज में सकारात्मकता फैले।"

छात्र 7 (विपरीत पक्ष):
"पर क्या हमेशा चुप रहना या मधुर बोलना सही होता है? कभी-कभी सच्चाई को कटुता के साथ कहना ज़रूरी हो जाता है।"

छात्रा 8 (निष्कर्षात्मक विचार):
"आपकी बात में भी तर्क है, लेकिन सत्य को भी मधुरता से कहा जा सकता है। विनय का मतलब यह नहीं कि हम अन्याय सहें, बल्कि यह कि हम अपनी बात शांति और मर्यादा में रखें।"
सूत्रधार (शिक्षक – समापन):

"बहुत सुंदर विचार प्रस्तुत किए गए। यह स्पष्ट है कि निंदा सहना साहस है, और मीठी वाणी बोलना एक कला है। हम सबको अपने व्यवहार में इस संतुलन को लाना चाहिए। धन्यवाद सभी छात्रों को।"

प्रश्न 2. कस्तूरी के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।

उत्तर:

कस्तूरी (Musk) एक अत्यंत सुगंधित पदार्थ है जो प्राचीन काल से ही भारत, चीन और अन्य देशों में बहुत मूल्यवान माना जाता रहा है। यह मुख्यतः **हिमालयी कस्तूरी मृग (Musk Deer)** के नाभि ग्रंथि (navel gland) से प्राप्त होता है।

कस्तूरी की उत्पत्ति:

- **प्राणी:** कस्तूरी मृग (Musk Deer), विशेषकर नर मृग।
- **स्थान:** यह मृग भारत के **हिमालय क्षेत्र** (उत्तराखंड, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर), नेपाल, भूटान और तिब्बत में पाया जाता है।
- **सुगंध स्रोत:** नर कस्तूरी मृग के शरीर में एक **ग्लैंड (मस्क ग्रंथि)** होता है, जिससे गाढ़ा, भूरे रंग का एक तीव्र सुगंधित पदार्थ निकलता है – जिसे कस्तूरी कहते हैं।

कस्तूरी का उपयोग:

1. **इत्र निर्माण में:** पारंपरिक और प्राकृतिक परफ्यूम्स में कस्तूरी की बहुत महत्ता है।
2. **आयुर्वेद में:** आयुर्वेदिक दवाओं में इसका उपयोग उच्च रक्तचाप, हृदय रोग व मानसिक रोगों के उपचार में होता था।
3. **धार्मिक महत्व:** हिन्दू पूजन में कभी-कभी इसे तिलक या इत्र के रूप में भी प्रयोग किया जाता था।
4. **कविता-साहित्य में:** 'कस्तूरी' को आत्मा या परम सत्य की खोज का प्रतीक माना गया है, जैसे कबीर का प्रसिद्ध दोहा:

   "कस्तूरी कुंडल बसै, मृग ढूँढै बन माहि।
   ऐसे घट घट राम है, दुनिया देखे नाहि।।"

संरक्षण और खतरे:

- कस्तूरी मृग को इस गंध के लिए **मार दिया जाता था**, जिससे इनकी संख्या बहुत घट गई।
- अब यह **लुप्तप्राय (Endangered)** प्रजातियों में गिना जाता है।
- **भारत सरकार** और अंतरराष्ट्रीय संगठन (जैसे CITES) ने इसके शिकार और व्यापार पर **प्रतिबंध** लगा रखा है।

कृत्रिम कस्तूरी:

आजकल **कृत्रिम (Synthetic)** कस्तूरी बनाई जाती है जिसे 'मस्क कंपाउंड' कहा जाता है। यह *पशु-हत्या रहित*, सस्ता और टिकाऊ होता है और परफ्यूम उद्योग में इसका ही अधिक प्रयोग होता है।

परियोजना कार्य

प्रश्न 1.

मीठी वाणी/बोली संबंधी व ईश्वर प्रेम संबंधी दोहों का संकलन कर चार्ट पर लिखकर भित्ति पत्रिका पर लगाइए।

उत्तर:

❖ **मीठी वाणी/बोली संबंधी:**

1. **ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोइ।**
   औरन को शीतल करे, आपहुं शीतल होइ॥
   — *कबीर*
2. **बोली एक अनमोल है, जो कोई बोलै जानि।**
   हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि॥
   — *कबीर*

❖ **ईश्वर प्रेम संबंधी:**

3. **प्रेम पियूष सोंत सरस, सुलभ सबन को आइ।**
   सरस सकल जीवान्भरत, पीवै सदा सुखाइ॥
   — *सूरदास*
4. **जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।**
   मैं बापुरि बूड़न डरी, रही किनारे बैठ॥
   — *कबीर*

egyanarchive